अनुसंधान दर्शिका प्रथम भाग
खण्ड – क
एम.डी. आयुर्वेद शोध प्रबन्ध सारांश
अनुक्रमणिका

6 – मौलिक सिद्धान्त

क्र. सं.	शीर्षक का नाम	:	अध्येता का नाम	पृष्ठ नं.
	1983			
1.	अर्श अतिसार ग्रहणी का–प्रायः परस्पर हेतुत्व एवं तद्गत अग्निमांद्य का चिकित्सात्मक अध्ययन	:	डा. आनन्द कुमार शुक्ला	1
	1984			
2.	ह्रास हेतुर्विशेषश्च–सिद्धान्त का प्रामाणिक अध्ययन	:	डा.योगेश्वर दयाल बंसल	2
3.	अपतर्पणोत्थ व्याधि में सन्तर्पण (सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक अध्ययन)	:	डा.योगेन्द्र कुमार	3
	1985			
4.	धातवो हि धात्वाहाराः (च.सू. 28/3)	:	डा. बृजनन्दन गौतम	4
5.	आयुर्वेदीय त्रिदोष सिद्धान्तान्तर्गत श्लेष्म विवेचन	:	डा. राजेश कुमार शर्मा	4
6.	''न च सर्वाणि शरीराणि व्याधि क्षमत्वे समर्थानि भवन्ति''(च.सू. 28/7) के परिप्रेक्ष्य में व्याधि क्षमत्व का आयुर्वेदीय विश्लेषण	:	डा. कमलेश कुमार शर्मा	5
7.	अग्नि विवेचन	:	डा. गोविन्दराम पयासी	6

1986

8.	दोषों का धातु एवं मलों के साथ आश्रयाश्रयी भाव (सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक अध्ययन)	:	डा. गणेश पाण्डेय	7
9.	देहस्य रूधिरं मूलम्–एक प्रायोगिक अध्ययन	:	डा. सत्यपाल शर्मा	8
10.	शरीर का समयोगवाहित्व एक विवेचन	:	डा. विजय कुमार पारीक	9

1987

11.	मानव प्रकृति परीक्षणात्मक अध्ययन (वातलाद्याः सदातुरा के परिप्रेक्ष्य में)	:	डा. विजय शंकर पाण्डे	9
12.	त्रिदोष एवं नाड़ी विज्ञान (सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक अध्ययन)	:	डा. नरेश कुमार शर्मा	10

1988

13.	अरिष्ट विज्ञानीयम् (ग्रहणी रोग के परिप्रेक्ष्य में)	:	डा. संतोष शर्मा	11
14.	''रोगाः सर्वेऽपि मन्देऽग्नौ'' उदर रोग के परिप्रेक्ष्य में अग्निवृद्धिकर भावों का तुलनात्मक अध्ययन	:	डा. केदार लाल मीणा	11
15.	संतर्पणोत्थ व्याधियों में अपतर्पण का सैद्धान्तिक विवेचन	:	डा. रूक्मिणी गुप्ता	12

1989

16.	आमो विषमचिकित्स्यानाम्	:	डा. रतन कुमार पारीक	13

1990

17.	''क्षीणेषु दोषेष्वनिलात्मकः स्यात्'' के सन्दर्भ में प्रमेह रोग में ''सवृंहणं तत्र कृशस्य कार्यम्'' का सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक अध्ययन	:	डा. मनोज कुमार शर्मा	13
18.	उपप्लुता योनिव्यापद् में पलाशादि कल्क प्रयोग द्वारा ''सपिच्छिला परिक्लिन्ना स्तम्भनः कल्क इष्यते'' सिद्धान्त की पुष्टि	:	डा. सीमा जैन	14